मई–जून 2023

मोरंगे

इस बार

खिड़की
यूसिके

गीत-कविताएं
बादल
हाय बाय
नथ पे फूल
हैरानी
सवाल
चालती टरेन मं सूं मारवाड़ देख ली

कहानियाँ
एक दोपहर बादलों की सैर
मुझे डर नहीं लगता
बाप और बेटा

याद की धूप-छाँव में
झाड़ी के पीछे

बात लै चीत लै
ऊंदरी और मेंढकी

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : खुशी
आवरण पर माँडना मदन मीणा के सौजन्य से
वितरण : लोकेश राठौर
वर्ष 14 अंक 155–156
' मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

yatra foundation

प्रबंधन
विष्णु गोपाल,
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
H-1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर,
मानटाउन, सवाईमाधोपुर
राजस्थान
322001

बादल

बादल कितना प्यारा है
हवाओं की छलनी से निकला
बिना पाईप का फव्वारा है

अर्चना प्रजापत, समूह –बादल

हरीश तिवारी

हाय–बाय

बिना पड़े हैरानी में
मेंढ़क कूदा पानी में

पानी में था– साँप
मेंढक बोला –अरे आप

साँप ने कहा – हाय
मेंढ़क बोला – बाय

सूरज सैनी, समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष

खिड़की

यूसिके

यूसिके को इतवार के देश जाना था। मगर वह इतवार के देश का रास्ता नहीं जानता था। चलते–चलते वह एक बड़ी सी बाँबी के पास पहुँचा। शाम हो गई थी और चींटियाँ अपने घर के दरवाजे बंद कर रही थीं।

'चीटी रानियो क्या तुम नहीं जानती कि इतवार कहाँ रहता है?' यूसिके ने पूछा।

'हम इस जंगल का तो चप्पा–चप्पा जानती हैं। मगर इतवार का देश हमने कभी नहीं देखा।' चींटियों ने जवाब दिया। 'फुदकी के पास जाओ। हो सकता है कि उसे मालूम हो।'

चलते चलते वह फुदकी के पास पहुँचा। फुदकी इतवार का रास्ता नहीं जानती थी लेकिन उसने उसे सोमवार का रास्ता बता दिया।

मालूम नहीं रास्ता लम्बा था या छोटा, यूसिके आखिरकार सोमवार के देश तक पहुँच ही गया।

'नमस्ते सोमवार!' यूसिके ने कहा। 'इतवार के देश का रास्ता कौनसा है?'

'नमस्ते यूसिके!' सोमवार ने जवाब दिया। 'इतवार के देश पहुँचने में छह दिन लगते हैं। मैं तुम्हें रास्ता तो दिखा दूँगा, पर पहले घास इकट्ठी करने में मेरी मदद कर दो।'

यूसिके राजी हो गया। उसने और सोमवार ने मिलकर शाम तक ढेर सारी घास इकट्ठी कर ली। सोमवार ने मेहनत से काम करने के लिए यूसिके की तारीफ की। फिर मंगलवार की ओर जाने वाला रास्ता बता दिया।

चलते चलते यूसिके मंगलवार के देश में पहुँचा। मंगलवार काम पर जाने की तैयारियाँ कर रहा था। 'नमस्ते मंगलवार! क्या तुम मुझे इतवार के देश का रास्ता बता सकते हो?'
'इतवार के देश पहुँचने में पाँच दिन लगते हैं। रास्ता तो मैं बता दूंगा पर पहले पेड़ लगाने में मेरी मदद कर दो।' दोनों ने जमकर काम किया और पेड़ लगा दिए। मंगलवार ने यूसिके को बुधवार के देश तक जाने का रास्ता बता दिया।

'नमस्ते बुधवार! कृपा करके मुझे इतवार के देश जाने का रास्ता बता दो।'
बुधवार भी काम में फँसा हुआ था। बछड़ा बाड़े से निकल कर भाग गया था और पकड़ में नहीं आ रहा था।
'पहले मुझे इस शैतान को पकड़ने में मदद करो।' पेरशान बुधवार ने यूसिके से कहा–'बातचीत बाद में होगी।' दोनों ने नन्हें भगोड़े को जल्दी ही पकड़ लिया। बुधचार ने यूसिके की फुर्ती की तारीफ की और कहा–'इतवार तक पहुँचने में तुम्हें चार दिन और लगेंगे। तुम बृहस्तपतिवार के यहाँ जाओ। वह इस रास्ते को बेहतर जानता है।'

बृहस्तपतिवार थोड़ी ही दूरी पर रहता था। वह अपने घर के दरवाजे पर खड़ा मानो यूसिके का इन्तजार ही कर रहा था। 'नमस्ते यूसिके!' उसने कहा। 'मैंने सुना है तुम बहुत बढ़िया लड़के हो। और हर किसी की मदद करते हो। जरा मेरी भी मदद कर दो। बस इन क्यारियों की निराई करनी है और पेड़ों में पानी डालना है।'

यूसिके को पहले तो ऐसा काम खास पसन्द नहीं आया। मगर जब फूल अपने सिर हिलाने लगे, मानो यूसिके को धन्यवाद दे रहे हों तो उसने महसूस किया कि बाग में काम करना भी कोई बुरी बात नहीं है। बृहस्तपतिवार तो ऐसा मददगार पाकर खुशी से उछल ही पड़ा। उसने यूसिके को बताया कि इतवार तक पहुँचने में बस तीन दिन और लगेंगे। और फिर वह उसे रास्ते तक छोड़ भी आया। जल्दी ही यूसिके शुक्रवार के देश में पहुँच गया। संयोग की बात शुक्रवार को उस दिन ढेर सारे कपड़े धोने थे। यूसिके को धुलाई मशीन का हैण्डिल घुमाना हमेशा अच्छा लगता था। इसलिए वह शुक्रवार के कहे बिना ही काम में जुट गया और जल्दी ही सब कपड़े धुलकर तैयार हो गए।

शुक्रवार ने उसे बताया कि इतवार के देश तक पहुँचने के लिए दो दिन और बाकी रह गए हैं।

(दोस्तो, यूसिके नाम की एक सचित्र किताब है। यह किताब बरसों पहले रूस देश से भारत पहुँची थी। इस किताब के कुछ पन्ने मुझे कहीं बिखरे हुए मिल गए। दो चार पन्ने नहीं मिले। एक तो शुरू का पन्ना नहीं मिला जिसमें शायद यह लिखा होगा कि यूसिके इतवार के देश क्यो जाना चा. हता था और चींटियों से मिलने के बाद फुदकी से उसकी क्या बातचीत हुई? फुदकी ने कैसे उसे सोमवार के देश का रास्ता बताया। चींटियों से मिलने के बाद यूसिके फुदकी से मिला और फुदकी ने उसे सोमवार तक जाने का रास्ता बताया। यह बात मैंने अपनी कल्पना से कहानी में जोड़ दी है। यूसिके के सोमवार से शुक्रवार तक पहुँचने की कहानी के पन्ने मिल ही गए तो वह आपने पढ़ ही लिए। इसके आगे के जो पन्ने नहीं मिले जिनमें निश्चित रूप से यह कहानी लिखी होगी कि कैसे यूसिके शनिवार तक पहुँचा। शनिवार तब क्या काम कर रहा था? उसने यूसिके को किस काम में लगाया और फिर कैसे इतवार के देश का रास्ता बताया। मैं सोच रहा था कि शुक्रवार से शनिवार तक पहुँचने की कहानी फिर इतवार के देश पहुँच जाने की कहानी को क्या तुम अपनी कल्पना से लिख सकते हो? मुझे तो लगता है तुम्हें यह कहानी लिख ही देनी चाहिए वरना बेचारा यूसिके शनिवार के रास्ते में कब तक भटकता रहेगा। और यह कितनी बुरी बात होगी कि छह दिन की दूरी में से पाँच दिन की दूरी पार कर चुका यूसिके एक दिन की दूरी पार न कर सके।
मुझे तो लगता है आज सारे काम छोड़कर यूसिके के इतवार के देश पहुँचने की कहानी लिख दो और मोरंगे को भेज दो।

मोरंगे तक कहानी पहुँचाने का रास्ता मैं बता देता हूँ। आप अपने समूह के शिक्षक को दे देना। वे मोरंगे के सदस्य को दे देंगे। मोरंगे के सदस्य मुझे तक आपकी कहानी को पहुँचा देंगे। कितना छोटा, सीधा, सरल रास्ता है। और यही कहानी क्यों आप जो भी लिखो, लिखकर इसी रास्ते से मोरंगे तक पहुँचाते रहो।)

सवाल

मुझे टीचर ने समझाया
मेरे समझ में नहीं आया
टीचर ने फिर समझाया
फिर मेरे समझ में नहीं आया
मैंने पडोसी से पूछा
मुझे कुछ समझ में आया
अगले दिन फिर समझ नहीं आया
मैंने पड़ोस की लड़की से पूछा
उसने समझाने से मना कर दिया
मुझे ये समझ में नहीं आया
स्कूल में सब मुझ पर हँसे
मैंने खुद को समझाया
तब मुझे समझ आया

भगवान सिंह गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, समूह–झरना

हैरानी

कागज की गोली बना
थाली में रखी
थाली को फिर चम्मच से
बजानी शुरू की

ध्वनि पर
कागज की गोली
नाचने लगी

ये खेल देखकर मुझे
हैरानी थी बड़ी

जयसिंह मीना, उम्र–14 वर्ष, समूह–हरियाली

काली, झील समूह

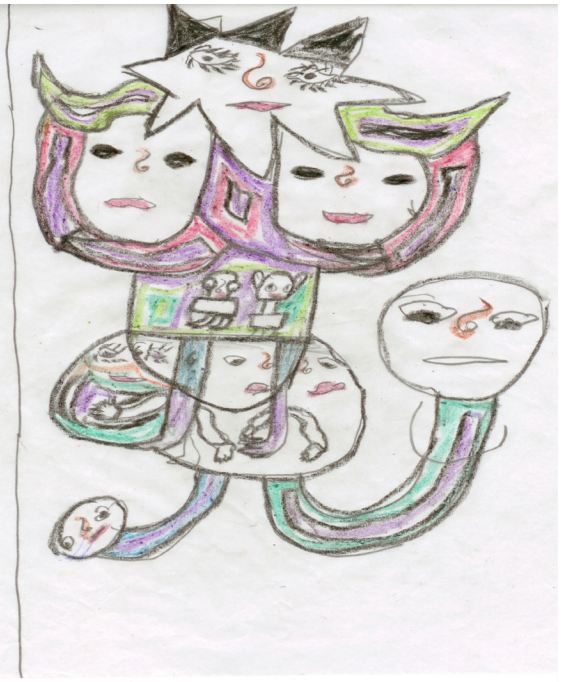

नथ पे फूल

नथ पे फूल चमेली का
नखरा देख अकेली का
झूला पेड़ की डाली का
झूलना देख निराली का

जितेन्द्र गुर्जर, समूह–बादल, उम्र–14 वर्ष

नीशा, रंगोली समूह

एक दोपहर बादलों की सैर

बहुत सारे बादल थे। उनमें एक बादल हाथी जैसा लगता था। बादलों ने कहा कि तुम तो बहुत अच्छे लग रहे हो। बादल बोला कि तुम भी मुझे बहुत अच्छे लग रहे हो। फिर उस बादल ने कहा कि मैं हाथी जैसा हूँ तो तुम कैसे हो? बादलों ने कहा–'हम तो जैसे हैं वैसे हीं है।' एक बादल बोला कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो, चलो हम घूमने चलते हैं।' बादलों ने कहा–'ठीक है चलते हैं।'

उन्हें एक जगह बहुत सारे पेड़ दिखाई दिए तो बादलों ने कहा कि इन पेड़ों पर बैठकर कुछ बातचीत कर लेते हैं। हाथी जैसा दिखने वाला बादल बोला कि ठीक है हम बातचीत कर लेते हैं। बातचीत करते करते बादलों को रात हो गई। वे सभी बादल पेड़ों पर ही सो गये। सुबह हुई तो सारे बादल अपने–अपने घर चले गये।

एक बादल के घर नहीं था तो वह बोला कि मेरे तो घर नहीं है।

सभी बादलों ने कहा–'ओह! फिर तुम रहते कहाँ हो?'
'अब मैं तो रहता हूँ जैसे ही रहता हूँ।' उस बादल ने कहा।
उनमें से एक बादल ने कहा–'तो तुम मेरे घर चलो। मैं तुमको अपने घर ले चलता हूँ।' वह बादल उसे अपने घर ले गया।

बादल को उस बादल के घर जाकर घर और बाहर में कोई खास फर्क नजर नहीं आया।

लीला बैरवा, उम्र–12 वर्ष, समूह–तिलक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मुझे डर नहीं लगता

एक बार एक भालू थी। वह अपने बच्चे के साथ तालाब में पानी पीने गयी। रास्ते में बरसात आने का मौसम हो गया तो वह वापस अपने घर की ओर भागने लगी। बच्चे ने पूछा, ''माँ आप क्यों भाग रही हो? तो वह बोली, ''बरसात आने वाली है। हम भीग जायेंगे, चलो जल्दी–जल्दी घर चलें।'' तब जाकर बच्चे के बात समझ में आई। वे अपने घर आ गये। घर आकर भालू के बच्चे ने कहा, ''माँ मैं बाहर जाता हूँ।'' बाहर आकर बच्चा बरसात को पुकारने लगा। कुछ ही देर में बादल घड़–घड़ करने लगे और बरसात आने लगी। बरसात बहुत तेज हो गई पर भालू का बच्चा वहीं खड़ा रहा। फिर बरसात ने कहा, ''बच्चे तुम मेरे से नहीं डरते हो क्या?'' भालू के बच्चे ने कहा, ''मैं आपसे नहीं डरता हूँ, मुझे बरसात बहुत अच्छी लगती है।'' यह सुनकर बरसात खुश हो गई। कुछ देर बाद बरसात थम गई। बरसात थमने के बाद भालू का बच्चा वापस अपने घर के अन्दर चला गया।

रामधणी, समूह–सागर, उम्र–8 वर्ष

बाप और बेटा

एक बार एक बाप और बेटे थे। बेटा पाँच वर्ष का था। वे दोनों बाजार से गुजर रहे थे। बेटे को केले दिखे तो बेटा बोला– ''पापा–पापा केला खाऊँगा।'' बाप बोला– ''पागल ये भी कोई केला है, यह तो केली है, केला तो इतना बड़ा होता है।'' बेटा नाराज हो गया। वे दोनों फिर आगे गये तो बेटे को संतरे दिखे। संतरे देखकर बेटा बोला– ''पापा–पापा संतरा खाऊँगा।'' बाप बोला– ''ये भी कोई संतरा है, ये तो संतरी है, संतरा तो इतना बड़ा होता है।'' बेटा फिर नाराज हो गया। वे आगे गये तो बेटे को फिर अंगूर दिखे तो बेटा बोला– ''पापा–पापा अंगूर खाऊँगा।'' बाप बोला– ''पागल ये भी कोई अंगूर है ये तो अंगूरी है, अंगूर तो इतना बड़ा होता है।'' अब की बार बेटे को गुस्सा आ गया तो बोला– ''पापा–पापा आप पापा नहीं हो, आप तो पापी हो, पापा तो इतना बड़ा होता है।''

बेटे की से बात बाप को सहन नहीं हुई। गुस्से में आकर उसने बेटे को अंगूर दिलवा दिए, वे भी हरे नहीं काले।

मनीषा बैरवा, समूह–तिलक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया।

पुष्पेंद्र

याद की धूप छाँव में

झाड़ी के पीछे

एक बार मैं हमारे गाँव के पहाड़ पर लकड़ी लेने गई। मेरे साथ मेरी बहन भी थी और हमारे गाँव की अन्य लड़कियाँ भी थी। हम सब पहाड़ पर चढ़ गये थे। मेरी बहन लकड़ी काटने लगी और मैं एक झाड़ी के पास एक पत्थर पर बैठ गई। अचानक मैंने देखा कि थोड़ी दूरी पर झाड़ी के पीछे रीछ बैठा हुआ है। मैनें जोर से चिल्लाकर सबको बुला लिया। मेरी बहन ने मुझसे पूछा कि क्या हुआ तो मैंने उससे कहा कि उस झाड़ी के पीछे रीछ बैठा हुआ है। अब सब लकड़ियों को छोड़कर भागने लगे। हमारे साथ एक लड़का भी था। वह ऊपर ही रह गया। हमने उसको आवाज दी तो उसने कहा– ''यहाँ कोई रीछ नहीं है।'' अचानक झाड़ी के पीछे से रीछ भागा तो उस लड़के को वह दिखाई दिया। फिर वह लड़का भी भाग कर नीचे हमारे पास आ गया। रीछ फिर दूसरे पहाड़ पर चला गया था। हमारे साथ एक लड़की थी। वह भी डूंगर से नीचे उतरी तो उसका पैर फिसल गया। उसके चोट लग गई थी। उसके पास चुन्नी थी। चुन्नी को मेरी बहन ने उसके पैर पर बांध दिया। वह लड़का जब नीचे उतरा तो मैंनें उससे कहा तुम यहाँ पर क्यों आये हो? रीछ तो वहाँ था ही नहीं। फिर हम सब हंसने लगे।

किरन मीना, समूह-सावन, उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा

काणूलाल, सूरज समूह

ऊंदरी और मेंढकी

एक ऊंदरी और एक मेंढकी दो भायल्यां ची। तो वानै, न्यूं की मेंढकी नं ऊंदरी से–'के जा थारा जीजाजी कु बुला ला, रोटी खाबा क कारणै।' ऊंदरो पटैल चो उठि पटैलायी कर रियो चो वो। तो खी मेंढकी नं–'थारा जीजा कू बुलार ला। थारा जीजा जी रोटी खावैगा।' तो वा गी, उचकती फुदकती, उचकती फुदकती। जार पूंची तो कांई खै री वा–

"कोटा काटन, रुई बगाड़न
ऊंदर जी घर चालो तो
लपटो ठंडो हो्रयो च।''

तो वा ऊंदरो खी क–

''पाणी म की मेंढ़की
फुदक फुदक फुदकै
चाल घर नं चाल
मूं आऊँ छूं, आऊँ छूं।''

उनं ऊकी उतार दी तो उनं ऊकी उतार दी। अतना मं फेर घर नं चलेगी वा। घर नं जार फूंची तो ऊंदरी ने पूछी–
'कांई हुयो थारा जीजाजी नै कांई खी। न आया क?'

'ओह क। ओ अस्यां खी।'

'कांई खी।'

खी क–

''पाणी म की मेंढ़की
फुदक फुदक फुदकै
चाल घर नं चाल

मूं आऊँ छूं, आऊँ छूं।''

'तैनैं वा सूं कांई खी ची?' ऊंदरी नं पूछी।

मैं यूं खी क–

"कोटा काटन, रुई बगाड़न
ऊंदर जी घर चालो तो
लपटो ठंडो हो्रयो च।''

'वा तू अस्यां कांई ब की? तैनैं तो वाकी सारीइ नाक कटा दी। फेर जा और मूं बताऊँ, अस्यां खीज्यौ। जा बेगी जा।'

तो फेर वा ऊंदरी गी। ऊंदरी नं खी–

रचना गुर्जर, सूरज समूह

"कान कटारा नौ सै का
फूंदा लटकै दो सै का
पटैलां घर चालो तो भोजन ठंडो होर्यौ च।''

ऊंदरो फूलग्यौ। मनै पटैलां खै दी क। तो ऊनै खी अब ऊंदरा नं क–

"तावड़ा की झलक पड़ै,
पगां उबाणा फलक पड़ै
थे चालो सुन्दर राणी म्हें आवां छां।''

ऊंदरो ऊंदरी कअ् लारै घ नं आग्यौ।

पुनर्लेखन -प्रभात

हरीश तिवारी

हीहीही–ठीठीठी

नीशा, रंगोली समूह

1.

मालिक ने अपने माली से कहा, ''पौधों को पानी दे दो''
माली ने कहा, ''मालिक, बारिश हो रही है।''
मालिक चिल्लाया, ''कामचोर, छाता लगा कर पानी नहीं दे सकता।''

2.

चिंकी– ''जब मैं छोटी थी तो छत से गिर गई थी।''
चिंकू – ''फिर तू बच गई थी या मर गई थी।''
चिंकी – ''अब मुझे क्या पता, मैं तो छोटी थी ना।''

कविता आगे बढाओ

कितनी सुंदर है ये कार
चला रहा है रामवतार

तरूण, रंगोली समूह

चालती टरेन मं सूं मारवाड़ देख ली

चालती टरेन मं सूं मारवाड़ देख ली
खेजड़ी करील आँकड़ा र झाड़ देख ली

ऊँचा– ऊँचा टीला ज्यां पै आँकड़ा ही आँकड़ा
रोहिड़ा का फूल और खेजड़ी का पातड़ा
आम–नीम कोनै आँख्या फाड़–फाड़ देख ली
चालती टरेन मं सूं मारवाड़ देख ली

चाले छै बरबूळ्या रोज, लाम्बी–लाम्बी चोटी का
टूकड़ा खावे छै टाबर बाजरा की रोटी का
गेहूँ–चणा–सरस्यूं कोनै आर पार देख ली
चालती टरेन मं सूं मारवाड़ देख ली

माथा पै ल्यावे छै पांणी, घणां ही जतन सूं
नर कै सागे नारी, ऊबी रहवे तन–मन सूं
वांकी बेट्यां धोरां मं चरावे ऊँट ऐकली
चालती टरेन मं सूं मारवाड़ देख ली

तुलसीराम गोचर, शिक्षक